पाठ 17. आओ सत्यार्थी बनें

पाठ का परिचय

यह पाठ कक्षाधारित एकांकी के रूप में है। कैलाश सत्यार्थी एक ऐसी विभूति हैं जिन्होंने अपना पूरा जीवन समाज के पीड़ित लोगों की सेवा में लगा दिया। उन्होंने दुनिया के लोगों को संदेश दिया कि प्रेम और करुणा ही जीवन का मूल मंत्र है। सभी प्राणियों के प्रति प्रेम की भावना रखने से ही संसार में सुख और शांति की स्थापना हो सकती है। विशेष रूप से बच्चों के प्रति उनके मन में अथाह स्नेह है, इसलिए इन्होंने बालश्रम रोकने के लिए अनेक कष्ट उठाए। संस्थाएँ बनाईं। कैलाश सत्यार्थी ने समाज से ठुकराए व पीड़ित बच्चों की शिक्षा और सेवा के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया। उन्होंने उन सभी बच्चों को आश्रय दिया जिन्हें समाज ने खतरनाक कारखानों में काम करने के लिए छोड़ दिया। इस प्रकार कैलाश सत्यार्थी ने अपनी निष्कपट सेवा द्वारा दया, करुणा और प्रेम का जो बीज बोया, वह आज एक विशाल वृक्ष का रूप धारण कर खड़ा हो रहा है। इस बहुमूल्य योगदान के लिए उन्हें राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर के अनेक पुरस्कार भी मिले हैं।

पाठ में निहित जीवन-मूल्य

समाज-सेवा कर जीवन को सार्थक बनाना। प्रेमपूर्ण व्यवहार करना। दया और करुणा का भाव जगाना। मानव-सेवा कर जीवन को धन्य बनाना।

पाठ का वाचन

पहले स्वयं आदर्श वाचन करें। उसके बाद बच्चों से एक-एक परिच्छेद का वाचन करवाएँ। ध्यान दें कि बच्चों के उच्चारण शुद्ध हों तथा वाचन करने में सहजता हो।

महत्वपूर्ण चर्चा

निम्नलिखित प्रश्नों पर आधारित चर्चा बच्चों से करें –

- बालश्रम से तुम क्या समझते हो?
- समाज-सेवा करना आवश्यक या अनावश्यक है?
- तुम्हारे परिवार में किसी ने समाज-सेवक बन जीवन बिताया या बिता रहा है?
- द्वार पर आए भिखारी के साथ तुम कैसा व्यवहार करोगे?
- समाज-सेवा के रूप में तुम भविष्य में क्या करना चाहोगे?
- देश के अनेक समाज-सेवियों में से तुम्हें सबसे अधिक कौन प्रभावित करता है और क्यों?